हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II Sem

विषय — हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास

नाटक की गणना दृश्य-काव्य के अन्तर्गत की जाती है। मनोरंजन के साधनों में नाटक एक महत्वपूर्ण तथा प्रमुख साधन है। पात्रों के कुशल अभिनय, रंगमंच तथा कथोपकथन आदि के द्वारा लेखक अपनी कथा को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। अब विचारणीय यह है कि नाटक का जन्म कब, कैसे तथा किन परिस्थितियों में हुआ?

हिन्दी नाटक साहित्य के विकास का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है। आधुनिक काल के पहले हिन्दी में मौलिक नाटक लिखे गये या नहीं, यह प्रश्न अनुसंधान के अभाव में अब तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। हिन्दी-साहित्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होती है।

नाटक का सूत्रपात सत्रहवीं शताब्दी में हुआ था। सन् 1662 में श्री बनारसीदास ने 'समय-सार' जैन कवि 'कुन्दाचार्य' के नाटक का भाषान्तर किया। प्राणचन्द ने 'रामायण महानाटक' दोहा-चौपाई में कथोपकथन का रूप दिया। सन् 1680 ई० में हृदयराम ने 'हनुमन्नाटक' का अनुवाद किया। 'प्रबोध चन्द्रोदय' का संस्कृत नाटकों में प्राधान्य रहा। ये केवल धार्मिक कथाओं को लेकर ही लिखे गये। ये नाटक की कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं। अठारहवीं शताब्दी तक नाटक बिल्कुल ही निर्बल तथा गतिहीन रहा। इसका प्रधान कारण था गद्य का अभाव होना। यद्यपि ब्रजभाषा में गद्य का प्रचार हो चुका था, तथापि यह नाटकों की वृद्धि में सहायक न सका। इसके अतिरिक्त रंगमंच का भी अभाव।

18 वीं शताब्दी के अनेक अनुवादों में 'विश्वनाथ सिंह' के 'आनन्द रघुनन्दन नाटक' भारतेन्दु ने प्रथम गद्य नाटक माना। ब्रज सबसे पहले गद्य-नाटक भारतेन्दु जी के पिता श्री 'गिरधरदास-कृत' 'नहुष' माना

राजा लक्ष्मण सिंह ने 'शकुन्तला' के अनुवाद में गद्य-भाग सरल बोली में तथा पद्य-भाग ब्रज-भाषा में किया है। इस प्रकार भारतेन्दु जी से पूर्व नाटकों में तीन विशेषताएँ मिलती हैं। प्रथम तो अधिकांश अनुवाद थे। दूसरे धार्मिक एवं पौराणिक थे तथा तीसरे वे जो ब्रजभाषा में लिखे गये, जिनका अधिकांश भाग पद्य में ही था।

हिन्दी-क्षेत्र में भारतेन्दु जी के आते ही हिन्दी-नाटक साहित्य में एक नवीन चेतना आ गई। अंग्रेजी नाटकों का प्रचार हो चुका था तथा बंगला नाटकों पर इसकी छाप पूर्ण रूप से लक्षित हो रही थी। भारतेन्दु जी के नाटकों में न तो प्राचीनता का अन्धानुकरण पाया जाता और न आधुनिक शैली का अनुकरण। 'अंधेर' एवं 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटकों के कथानकों में नवीनता पायी जाती है तथा वर्तमान परिस्थि के अनुरूप धार्मिक ढोंग और मद्यप आदि को भी चित्रित किया गया है।

भारतेन्दु जी के नाटकों के विषय प्रायः श्रृंगार, हास्य, कौतुक तथा देश प्रेम रहे हैं। "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" एक सुन्दर प्रहसन है। 'प्रेमयोगिनी' आत्मकथात्मक है। 'भारत-दुर्दशा' तथा 'भारत-जननी' में देश की दुर्दशा को चित्रित किया गया है। इस प्रकार भारतेन्दु जी के नाटकों में सामाजिक दशा का अच्छा चित्रण मिलता है। भारतेन्दु जी हिन्दी के प्रथम नाटककार थे। उन्होंने अपने नाटकों में अभिनयानुकूल बनाने का प्रयत्न किया। भारतेन्दु के नाटकों में जीवन और कला, सौंदर्य और शिव, मनोरंजन और लोक-सेवा का सुन्दर समन्वय है। भारतेन्दु काल में नाटकों और नाटककारों की लम्बी श्रृंखला है।